आप परमेश्वर से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कैसे कहते हैं?

(12:1-8)

आप किसी से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कैसे कहते हैं? हम सबके लिए दूसरों के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करना बहुत ही कठिन कार्य है। मेरे माता-पिता बताते थे कि जब मैं पांच वर्ष का था तो मैं केट नामक एक छोटी लड़की से बहुत प्रेम करता था, जो मेरे साथ संडे स्कूल जाती थी। एक रात जब हम आराधना के बाद चर्च बिल्डिंग से घर आ रहे थे, तो मैंने अगली सीट पर झुकते हुए अपने पिता से पूछा था, ''डैड, जब आपको किसी से प्रेम हो जाए तो आप क्या करते हैं?'' उनका उत्तर स्पष्ट और एक जवान लड़के के दिल को छूने वाला था। उन्होंने कहा था, ''बेटा,'' ''मेरे ख्याल से तुम उस लड़की के लिए एक अंगूठी खरीदोगे।'' बाद में उसी सप्ताह मेरे माता-पिता मुझे एक दुकान पर ले गए और हमने वैसा ही किया: मैंने बच्चों की एक खिलौना अंगूठी खरीदी और अगली बार मिलने पर उसे दे दी।

आप किसी से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कैसे कहते हैं? एक बार मैंने बुधवार की रात बाइबल स्टडी में कॉलेज के छात्रों से पूछा कि उन्होंने प्रेम को व्यक्त होते कैसे देखा है। उससे एक सप्ताह पहले ही एक लड़के-लड़की की मंगनी हुई थी। उनमें से एक ने बताया कि जब लड़की अपनी सहेलियों की एक बहुत बड़ी टोली से घिरी हुई थी तो वह अचानक अपना सबसे अच्छा सूट पहने हुए आया और पूछने लगा था। वहां, सबके सामने उसने लड़की का हाथ पकड़ा, उसके सामने झुका और उससे शादी का प्रस्ताव रखा था! (बेशक, उसने ''हां'' ही कहा था!)

कॉलेज के कुछ छात्रों को किसी ने अपना प्रेम व्यक्त करने के लिए विशेष कार्ड और पत्र भेजे थे। एक लड़की ने याद किया कि उसके पिता ने अपनी पत्नी के कठिन समय में उसके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने में क्या किया था। बिना कुछ कहे, वह घर साफ

करता, इस तरह अपनी व्यस्त पत्नी का कुछ बोझ हल्का कर देता था। एक और छात्रा ने बताया कि उसकी मां अपनी बेटी के स्कूल के लंच बॉक्स (दोपहर के खाने) में रखे केलों पर हमेशा कोई न कोई मनभावनी सी बात लिख देती थी। एक युवक ने बताया कि कैसे उसकी दादी उसे गर्मियों की छुट्टियों में घूमने भेजने के लिए हाथ से काम करके पैसे कमाती थी, और एक छात्रा ने तो यहां तक बताया कि कैसे उसके पिता ने एक बार अपनी बेटी के लिए कॉलेज की किताबें खरीदने के लिए इनाम में मिली अपनी पिस्तौल तक बेच दी थी।

''मैं तुम से प्रेम करता/करती हूं'' कहने के लोगों के अपने-अपने ढंग हैं, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप परमेश्वर से ''मैं तुम से प्रेम करता/करती हूं'' कैसे कहते हैं ? यह एक नाज़ुक प्रश्न है और मेरा मानना है कि इसका उत्तर हमारे पाठ अर्थात यूहन्ना 12:1-8 में मरियम ने दिया है।

मरियम का उपहार

हमारी कहानी की घटनाएं यहूदियों के पर्व फसह से छह दिन पहले आरम्भ हुईं। इस लिए ये घटनाएं यीशु के जीवन के अंतिम सप्ताह में ही रखी गई हैं। सुसमाचार की चारों पुस्तकें संकेत देती हैं कि यीशु अंतिम बार गलील से यरूशलेम के दक्षिण की ओर गया था। यहां से वह पहले भी यरीहो से होते हुए गया था, जहां उसकी मुलाकात जक्कई से हुई थी (लूका 19:1-10)। सब को मालूम था कि उसका वहां जाना खतरे से खाली नहीं है (11:8), और यीशु भी इस बात को जानता था कि वह यरूशलेम में मरने के लिए जा रहा है।

यीशु मरियम, मरथा और लाज़र के गृहनगर बैतनिय्याह में आया। यहां वह अपने सम्मान में दिए गए एक रात्रि भोज में भाग ले रहा था।[1] हमें बताया गया है कि वहां आए अतिथियों में लाज़र भी था। इस रात्रि भोज के लिए अतिथियों की सूची की कल्पना करें। इस सूची में ''मृतक लाज़र'' और ''शमौन कोढ़ी'' भी थे। कोई ''अंधा याकूब'' या ''लंगड़ा यहोशू'' भी आया हो सकता है। सबके पास बताने के लिए अपनी कहानी होगी कि यीशु ने उसका जीवन कैसे बदला था। मरथा, अर्थात लाज़र की परिश्रमी बहन अतिथियों की सेवा कर रही थी।

भोज के दौरान मरियम यीशु के पास आई। हमारे ख्याल से वह लाज़र की दोनों बहनों में अधिक जज़्बाती है जो अपने भाई की मृत्यु के बाद बैतनिय्याह में यीशु के लौटने पर उसके पांवों पर गिरकर रोई थी। उसके लिए यीशु एक अच्छा मित्र, एक अद्‌भुत शिक्षक और आश्चर्यजनक चंगाई देने वाला अर्थात वह आदमी था जिसने उसकी सबसे बड़ी पीड़ा को सबसे बड़े आनन्द में बदल दिया था। उस शाम यीशु के प्रति उसकी भावनाएं शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती थीं। वह इतना महान, इतना पवित्र व इतना निकट था फिर भी वह यरूशलेम में मरने के लिए जा रहा था! इन सबको मन में रखते हुए, मरियम ने उद्धारकर्त्ता का अभिषेक किया।

यूहन्ना ने लिखा है, ''मरियम ने जटामांसी का आध सेर बहुमोल इत्र लेकर यीशु के

पांवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पांव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया'' (12:3)। जटामांसी बहुत ही महंगा इत्र था जिसे उत्तरी भारत से आयात किया जाता था। इसे अर्धपारदर्शी जिप्सम के जार में रखा जाता था। इत्र को निकालने के लिए, जार के ऊपरी भाग को तोड़ा जाता था, जिससे सारे इत्र को एक ही बार में इस्तेमाल करना पड़ता था। यूहन्ना ने लिखा कि जार में लगभग आधा सेर (बारह औंस) जटामांसी था, जो मरियम ने यीशु के पांवों पर उंडेल दिया था। सामान्यतया इसका इस्तेमाल किसी विशेष अवसर पर कई अतिथियों के सिरों पर अभिषेक करने के लिए किया जाना था। इसके बजाय, मरियम ने सारे का सारा इत्र यीशु के पांवों पर डाल दिया और उसके पांवों को अपने बालों से पोंछ दिया। यह किसी व्यक्ति द्वारा जो यीशु से ''मैं तुझ से प्रेम करता/करती हूं'' कहना चाहता हो, एक खूबसूरत उपहार था।

मरियम के उपहार की कई विशेषताओं ने उसे विशेष बना दिया। पहली तो यह कि इत्र बहुत महंगा था। यहूदा ने यह ध्यान दिलाते हुए कि उस इत्र को एक मजदूर की एक वर्ष की मजदूरी के बराबर मूल्य में बेचा जा सकता था, उसके इस कार्य पर आपत्ति की (12:4, 5)। एक युग से दूसरे युग में या एक स्थान से दूसरे स्थान में पैसों में उसकी कीमत बता पाना तो कठिन है, परन्तु एक साल की मजदूरी के महत्व को हर कोई समझ सकता है! इतने महंगे उपहार से भी यहूदा जैसे मन पर कोई प्रभाव न हुआ।

दूसरा, मरियम का उपहार अपने बारे में विचार किए बिना दिया गया था। कई बार उपहार देते हुए हम उपहारों के प्राप्तकर्ता के बारे में सोचने के बजाय अपने बारे में अधिक विचार करते हैं। हमें लगता है, ''क्या यह काफी होगा?''; ''क्या उन्हें अच्छा लगेगा?''; ''वे मेरे बारे में क्या सोचेंगे?'' परन्तु मरियम के बारे में हर बात यह संकेत देती है कि उसके मन में ऐसा कोई प्रश्न नहीं है। वह केवल यीशु के बारे में ही सोचती थी और उसका ध्यान ''गुरु'' के प्रति अपना प्रेम दिखाने पर ही लगा था। अपने बालों को खोलकर नीचे करने से यह संकेत मिलता है कि मरियम अपने आपको कितना छोटा मानती थी। उस युग की यहूदी महिलाएं ऐसा काम नहीं कर सकती थीं, परन्तु मरियम के व्यवहार से लगता है कि ''किसे परवाह करता है? यीशु ही सब कुछ है।''

तीसरा, मरियम के उपहार में विनम्रता थी। उसने यीशु के सिर का नहीं बल्कि पांवों का अभिषेक किया। उसने उसके पांवों को पोंछने के लिए तौलिये या कपड़े का नहीं बल्कि अपने बालों का इस्तेमाल किया। मरियम के लिए घमंड कोई मुद्दा नहीं था। उसके लिए तो केवल यीशु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करना ही सब कुछ था।

अन्त में, मरियम ने वह आधा सेर जटामांसी इत्र वास्तव में अपना मन भेंट करके उंडेल दिया। कई बार हम अपने किसी प्रिय को फूल, अंगूठियां, कपड़े या धन देते हैं। हर हाल में हम जो कुछ भी देते हैं उसका अर्थ उस उपहार से कुछ बढ़कर ही होता है अर्थात इससे हमारे प्रेम को व्यक्त करने की एक कोशिश का पता चलता है। मरियम के इत्र में भी यही बात थी। इत्र यीशु को और वहां मौजूद हर किसी को यह कहने का एक अच्छा ढंग था कि वह नासरत के अपने विशेष मित्र से प्रेम करती थी।

हमारा उपहार

मरियम की तरह आज हम उपहार कैसे देते हैं? हम परमेश्वर से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कैसे कहते हैं? ऐसे सम्बन्ध के लिए कैसा उपहार उपयुक्त है? बाइबल उपहार के अद्‌भुत विचारों से भरी पड़ी है!

आरम्भ में हम उसे अपने मन दे सकते हैं। आखिर, यीशु के अनुसार सबसे बड़ी आज्ञा ''परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम'' रखना ही तो है (मत्ती 22:37)। बाइबल के एक शिक्षक रॉबर्टसन मक्यूल्कन के जीवन का सच्चा अनुभव, जिसकी पत्नी अल्जाइमर रोग (दिमाग को प्रभावित करने वाली एक गंभीर बीमारी जो धीरे-धीरे स्मरण शक्ति को खत्म कर देती है) से पीड़ित थी, हमें उस दिशा में ले जाता है जिसका अर्थ हमें अपना मन परमेश्वर को देना है। मक्यूल्कन ने लिखा:

> सेमिनरी के प्रबन्धकों ने हमारे घर में एक साथी के रहने का प्रबन्ध किया ताकि मैं हर रोज दफ्तर जा सकूं। उन दो वर्षों में म्यूरियल को घर रखना कठिन होता जा रहा था। मेरे घर से निकलते ही वह मेरे पीछे चली आती थी। मेरे साथ उसे अच्छा लगता था; मेरे बिना वह निराश हो जाती थी, कई बार तो सहम सी जाती थी। स्कूल आने जाने के लिए घर से एक मील पैदल चलना पड़ता था। वह दिन में दस बार तक आती जाती थी।
>
> कई बार रात को, उसके कपड़े बदलने में उसकी सहायता करते समय मुझे उसके लहू लुहान पैर दिखाई देते थे। जब मैंने अपने पारिवारिक डॉक्टर को बताया, तो वह अवाक रह गया। ''इतना प्रेम,'' उसने केवल इतना ही कहा। फिर एक क्षण के बाद ''मुझे एक थ्योरी मिल गई है कि वर्षों में विकसित ऐसे गुण ऐसे समयों में बाहर आते हैं।'' काश मैं परमेश्वर से ऐसा प्रेम कर सकूं कि हर समय उसके निकट रहूं।[2]

परमेश्वर से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कहने का सबसे स्पष्ट ढंग उसे बताना है। व्यक्तिगत प्रार्थना और आराधना में इकट्ठे होने के लिए आकर हम यही करते हैं। भजनों से हमें पता चलता है कि हम प्रभु के सामने अपने प्रेम को कैसे व्यक्त कर सकते हैं। हम भजन लिखने वाले की नकल करते हैं: ''हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूंगा, और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूंगा। प्रतिदिन मैं तुझ को धन्य कहा करूंगा, और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूंगा'' (भजन 145:1, 2)।

ऑपरेशन डैज़र्ट स्टॉर्म में, जब अमेरिका ने इराक पर हमला किया था युद्ध के दौरान स्कॉट स्पेशर विमान चालक मारा गया जो अपने पीछे पत्नी और दो छोटे बच्चे छोड़ गया। उसकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद, उसका सामान उसकी पत्नी को लौटा दिया गया। उस सामान में एक पत्र भी था जो उसने अपनी मृत्यु से एक दिन पहले लिखा था, परन्तु डाक में डालने के लिए उसे समय नहीं मिला था। इस पत्र में उसने अपने दोनों बच्चों को कुछ लिखा था और अन्त में अपनी पत्नी के लिए ये पक्तियां लिखते हुए पत्र पूरा किया था: ''तुम

मेरे जीवन की मेजसज्जा हो। मैं तुम्हारे साथ पूरी तरह संतुष्ट रहा हूं। मेरे जाने के बाद फिर से प्रेम करना सीख लेना।''[3] कई बार अपने प्रेम को शब्दों में कहना सबसे बड़ा उपहार हो सकता है!

दूसरों से प्रेम करना परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को भी दर्शाता है। अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना एक ऐसा विचार है जिसे पुराने नियम में बताया गया था और यीशु द्वारा उसे दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में उद्धृत किया गया था।[4] जैसे एक पति अपने बच्चों से प्रेम करके अपनी पत्नी से प्रेम दिखाता है, वैसे ही हम भी अपने साथियों से प्रेम करके परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को दिखाते हैं। एक दूसरे से प्रेम करके हम परमेश्वर से कहते हैं ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं।''

धर्मशास्त्र भी ऐलान करता है कि हम परमेश्वर के लिए अपने प्रेम को दूसरों से बात करके व्यक्त कर सकते हैं। इसे ''अंगीकार'' कहा जाता है। यीशु ने कहा:

> जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा [अर्थात अंगीकार करेगा], उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसका मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा (मत्ती 10:32, 33)।

परमेश्वर के लिए अपने प्रेम के बारे में दूसरों को बताना परमेश्वर से ''मैं तुम से प्रेम करता/करती हूं'' कहने का दूसरा ढंग होता है।

परमेश्वर से ''मैं तुम से प्रेम करता/करती हूं'' कहने का शायद सबसे कठिन ढंग केवल उसकी आज्ञा मानना, और यदि हम प्रभु से प्रेम करते हैं तो यह ऐसा ढंग है जिससे हम बच नहीं सकते। यूहन्ना ने लिखा, ''और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं'' (1 यूहन्ना 5:3)। कई बार लोग इसी बात को सुनना पसन्द नहीं करते, परन्तु उसे प्रसन्न करने के लिए हमें उसकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी।

आज्ञा मानने के स्पष्ट और व्यावहारिक स्वभाव के साथ हमारी कठिनाई एक आदमी और उसकी पत्नी की नीचे दी गई कहानी में देखी जा सकती है। आदमी बहुत बीमार था, सो एक दिन उसकी पत्नी अपने पति की हालत बताने के लिए डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने उस स्त्री को एक ओर ले जाकर बताया, ''तुम्हारा पति यदि हर रोज़ तीन बार घर का बनाया हुआ स्वच्छ खाना खाए तो वह मर जाएगा। इसके अलावा उसके जीवन में तनाव कम करने के लिए, तुम्हें उसके साथ कोमलता व दया से पेश आना होगा। अन्त में, रोगाणुओं से लड़ने की उसकी शक्ति के कम होने के कारण, घर हमेशा साफ सुथरा होना चाहिए।'' अपने पति के पास आकर उस स्त्री ने जो उससे यह सुनने को उत्सुक था कि डॉक्टर ने क्या-क्या बताया, ''डॉक्टर ने कहा है कि तुम मरने वाले हो!'' परमेश्वर से प्रेम करना यह कहने से कहीं अधिक है कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं; इसके लिए उसकी

आज्ञा मानना आवश्यक है, जैसे प्रेम करने वाले माता-पिता, पति-पत्नी या बच्चों के लिए केवल प्रेम की बातें करना ही काफी नहीं है।

परमेश्वर से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कहने के ये कुछ ढंग हैं। आपको मालूम है कि परमेश्वर हमसे ''मैं तुमसे प्रेम करता हूं'' कैसे कहता है?

परमेश्वर का उपहार

मरियम के यीशु को अभिषेक करने और भोजन खाने के बाद, यीशु यरूशलेम की ओर निकल पड़ा। वह जानता था कि वह कहां जा रहा है और क्या कर रहा है। उसे इस बात का भी अहसास था कि उसका यह जाना अंतिम होगा और यहूदी अगुवे उसे मारने को कृत संकल्प थे। उसकी मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं होनी थी। पहले भी उसने कहा था:

> पिता इसलिए मुझ से प्रेम करता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है (यूहन्ना 10:17, 18)।

यीशु अपनी इच्छा से, संसार को सबसे बड़ा उपहार देने के लिए बैतनिय्याह से निकला! अगले कुछ ही दिनों में, यीशु ने संसार के पापों के लिए क्रूस पर मरना था। यीशु को दिए गए मरियम के उपहार की कहानी बहुत शानदार है, परन्तु क्रूस पर किसी के प्राण देने की बड़ी घटना के मुकाबले में इसका महत्व कम हो जाता है!

सारांश

यीशु की मृत्यु के बाद, उसकी देह को एक कब्र में रखा गया, जहां से वह तीन दिन बाद जी उठा। पौलुस ने इन घटनाओं के महत्व को यह कहकर संक्षिप्त कर दिया कि यीशु ''हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया'' (रोमियों 4:25)। परमेश्वर कई तरह से, परन्तु विशेष रूप से यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने से, हम में से हर एक से कहता है ''मैं तुमसे प्रेम करता हूं।'' यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह सम्बन्ध पहले ही बनाया गया था, जैसे यूहन्ना ने लिखा है, ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (3:16)।

क्या आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं? यदि करते हैं, तो आप अभी उस प्रेम को कैसे दिखा रहे हैं? शायद आपको पाप से मुड़कर और मसीह में बपतिस्मा लेकर अपने प्रेम को व्यक्त करने की आवश्यकता है (प्रेरितों 2:38)। शायद आपको उस विश्वास की ओर लौटकर जिसे कभी आपने चुना था परन्तु उससे फिर गए थे, दोबारा अपने प्रेम को व्यक्त करने की आवश्यकता है। शायद आपको परमेश्वर से केवल यह कहकर कि ''मैं तुमसे प्रेम

करता/करती हूं'' अपना प्रेम व्यक्त करने की आवश्यकता है। मरियम हमें मार्ग दिखाती है। क्या आप आज प्रभु से ''मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूं'' कहेंगे?

पाद टिप्पणियां

[1]मत्ती 26:6 और मरकुस 14:3 में यह घटना शमौन कोढ़ी के घर में मिलती है। [2]रॉबर्टसन मक्यूल्कन, ''रिपेयिंग ए फ़ोर-ईयर डैट,'' *लीडरशिप* (सम्मर 1993): 43. [3]जैरी डी. टवंटियर, द *पॉज़िटिव पावर ऑफ़ प्रेज़िंग पीपल* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1994), पृ. न. [4]लैव्यव्यवस्था 19:18; मत्ती 22:39.